ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 216-218**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

भक्ति साहित्य का संरक्षण और संत रज्जब

डॉ0 प्रमोद कुमार
असि0 प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष–हिन्दी, श्री चित्रगुप्त (पी0जी0) कॉलेज मैनपुरी (उ0प्र0) भारत

Received-16.12.2024, Revised-15.12.2024, Accepted-29.12.2024 **E-mail : pvpramod6@gmail.com**

सारांशः रज्जब भक्ति–आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर है। दुर्भाग्य से भक्ति–आन्दोलन को संदर्भ में हम जिन कवियों की चर्चा करते है उनमें रज्जब छूट जाते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में सर्वाधिक मुस्लिम कवि भक्तिकाल में हुए। रज्जब, रहीम और रसखान के बाद के है। जायसी जैसे सूफी कवि के बाद के। ये न रामभक्त कवि है न कृष्णभक्त। ये राम–रहीम और केशव करीम की एकता के गायक है। निर्गुण कवि रज्जब दादूदयाल के प्रमुख शिष्यों में से एक है।

कुंजीभूत शब्द– आविर्भाव, काव्यधारा, भारतीय पुनर्जागरण, छायावादी युग, उदात्त, युगचारण, प्रादुर्भाव, अस्मितापूर्ण

निर्गुण संतों में निःसंदेह कबीर का व्यक्तिव बहुत बड़ा है। कबीर ने जो कहा सुना उसके संवाहक संत कबीरपंथ में भले न पैदा हुए हों, अन्य पंथों में अवश्य हुए। कबीर के बोध को जन–जन तक पहुँचाने में दादूपंथी संतों की बड़ी भूमिका है। संख्या की दृष्टि से दादू के जीवन में ही जितनी बड़ी संख्या में शिष्य– प्रशिष्य दादू के बने, संभवतः उतने शिष्य किसी अन्य संत के नहीं। दादूपंथी संतों में एक बहुत बड़ी संख्या पढ़े –लिखे संतों की है। प्रायः निर्गुण संतों की कोई औपचारिक शिक्षा नहीं हुई थी। लेकिन इस प्रकार की बात दादूपथियों के साथ नहीं है। जगजीवनदास जैसा शास्त्रार्थी, सुन्दरदास जैसे प्रकांड शास्त्रज्ञ, पंडित और साधु निश्चलदास जैसे दार्शनिक दादूपंथी ही थे। संत साहित्य के संरक्षण और संवर्द्धन की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य दादूपंथियों ने किया। इन लोगों ने अपने गुरु की वाणियों को संरक्षित तो किया ही पूर्ववर्ती तमाम संतों की वाणियों का संरक्षण भी प्रदान किया इन सतों में रज्जब का नाम महत्त्वपूर्ण है। वे संतों की रचनाओं का संग्रह करते थे। सगुण निर्गुण का भेद नहीं किया। सगुण भक्तों को भी सम्मानजनक स्थान दिया। संस्कृत– आचायों कवियों की चुनी हुई रचनाएँ भी इनके संकलन में स्थान पायी। इन्होंने संग्रह–संपादन की एक नयी तकनीक विकसित की सम्पूर्ण संत साहित्य को रागों और अंगों में विभाजित किया। विभिन्न अंगों में संबंधित विषय की। यह बहुत बड़ा काम था। उस काल की रचनाओं का आलोड़न विलोड़न कर चयन करना कोई आसान काम नहीं था। रज्जब ने यह काम तब किया जब अपने ही लिखे के संरक्षण की बात बहुत मुश्किल थी। सर्वगी में वे भी कवि है जो श्रुति–परम्परा में ही जीवित थे। ये वे संत थे जो मसि कागद से दूर आँखिन देखी बोलते थे। एक, दो, दस नहीं रज्जब के संकलन में 237 कवि है। ष्सर्वगीष न होती तो मध्यकाल के बहुत से कवि काल के गाल में चले गये होते। रज्जब ने अल्पख्याति प्राप्त बड़े कवियों को अपने संग्रह में स्थान दिया। रज्जब स्वयं एक बड़े कवि थे। उनकी रचनाएँ रज्जब–वाणी श्में संकलित हैं। दुर्भाग्य से रज्जब की दोनों कृतियाँ बहुत दिनों तक हस्तलेखों में दबी पड़ी रही। इस कारण भी हिन्दी जगत् उनके कार्यों से परिचित न हो सका ।

दादू के महान शिष्यों की परम्परा में रज्जब का विशिष्ट स्थान है। दादू के जीवन में ही उनके शिष्यों की संख्या बहुत बड़ी हो गयी थी। लालदास की नाममाला में दादू के शिष्यों की संख्या 152 बतलायी गयी है। इन 152 शिष्यों में भी 52 को अत्याधिक महत्वपूर्ण माना गया है। इन 52 शिष्यों में से अधिकांश के नाम पर सम्प्रदाय स्थापित हुए, इनकी परम्पराएँ चलीं।

रज्जब को साधु–सत्संग की लगन बचपन से ही लग गयी थीं। यह लगन बढ़ती ही चली गयी। रज्जब के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना उनके विवाह से संबंधित है। रज्जब का विवाह आमेर के एक प्रतिष्ठित पठान परिवार में तय हुआ था। निश्चित तिथि को बारात सजधज कर पूरी तैयारी के साथ सांगानेर से आमेर आयी। रज्जब दुल्हा रूप में बहुत सुन्दर लग रहे थे। सुन्दर और सुडौल शरीर तो उनका था ही। उस शरीर पर शादी के वस्त्र और भी सुन्दर लग रहे थे। रज्जब की रूचि सत्संग में थी ही। उन्होंने साधुओं से दादू के सिद्ध और चमत्कारी व्यक्तिव के बारे में सुन रखा था। आमेर पहुँचने पर रज्जब को दादू का स्मरण हो आया। वहाँ उन्होंने किसी व्यक्ति से दादूजी के निवास स्थान के बारे में पूछा। उस व्यक्ति ने बताया कि दादूजी का आश्रम यहीं है। वे यहीं आश्रम में रहकर साधना करते है। रज्जब के मन में दादूजी के दर्शन की लालसा बलवती हो उठी। उन्होंने अपने मित्रों से कहा कि पहले दादूजी का दर्शन करेंगे।

संत दादू से दीक्षा ग्रहण करते समय रज्जब की अवस्था लगभग 20 वर्ष की रही होगी। कुछ विद्वानों ने 16 वर्ष भी बतलाया है। पुरोहित हरिनारायण शर्मा ने रज्जब की जीवनी को प्रमाणिक रूप से प्रस्तुत करने के लिए यथेष्ट प्रयत्न किया था। रज्जब ने अपने जन्म स्थान और अपनी साधना–स्थली सांगानेर में एक बार गुरू महोत्सव दादू पधारे थे। उस महोत्सव में रज्जब और उनके शिष्यों ने गुरूजी की बड़ी सेवा की। खूब आदर– सत्कार किया। रज्जब अपने शिष्यों के घर भी दादू को ले गये। रज्जब ने बहुत दिनों तक अपने स्थान पर गुरूजी को रखा। जब तक दादू सांगनेर रहे वहाँ अध्यात्म का अद्भुत माहौल बना रहा। रज्जब और अन्य शिष्य प्रतिदिन नयी–नयी स्तुतियाँ और पद–रचना कर गुरूजी को भेंट करते थे। दादू की पूरी मंडली वहाँ थी। कीर्तन, भजन चलता ही रहता था। आसपास का जनसमुदाय भी वहाँ एकत्रित होता था।

रज्जब की गुरु भक्ति प्रसिद्ध है। ये बलिष्ठ शरीर के थे। विभिन्न अवसरों पर वे शारीरिक बल का उपयोग करते थें। दादूपंथी साधुओं के बीच रज्जब से संबंधित एक प्रसंग की चर्चा परम्परा से होती आयी है। प्रसंग इस प्रकार हैरू दादू उन दिनों नरैना में थे। काष्ठ की चौकी पर स्नान करके खड़े थे। उन्होंने रज्जब को पुकारा रज्जब ! मेरी खड़ाऊँ लाओ। रज्जब ने कहा– गुरुदेव, खड़ाऊँ की क्या जरूरत है। चलिए, चौकी सहित ही आपको आसन तक पहुँचा देता हूँ। दादू ने फिर कहा रज्जब ! खड़ाऊँ लाओ रज्जब ने बड़ी विनम्रता से कहा– गुरुदेव, आप चौकी पर ही विराजिए। मैं आपको चौकी सहित आपके आसन तक पहुंचा देता हूँ। दादू ने कहा–नहीं, नहीं, तुम खड़ाऊँ लाओ। रज्जब अपने आग्रह पर अड़े रहे। दादू ने सोचा–रज्जब को अपने बल का गर्व हो गया है। संत के लिए किसी भी प्रकार के गर्व का होना ठीक नहीं। घमंड होने से साधक साधना के पथ से च्युत होता है। अतः रज्जब का घमंड तोडना आवश्यक है। वे रज्जब की बात मान गये। मौन होकर चौकी पर बैठ गये। दादू का

शरीर कृश था। रज्जब ने बड़ी सावधानी से धीर से इस प्रकार चौकी, उठाना प्रारंभ किया जिससे कि गुरूजी को कोई कष्ट न हो। चौकी हिली ही नहीं।

रज्जबदास एक सामान्य पठान वंश में उत्पन्न हुए थे। बड़ी पवित्रता के साथ उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया। उनकी साधना, अध्ययन, गुरु–भक्ति और ज्ञान पिपासा संत और गृहस्थ दोनों के लिए अनुकरणीय बनी। उनकी जीवन और कार्य दोनों ही उल्लेखनीय हैं।

पूर्ववर्ती शोधकार्य– संत रज्जब को केन्द्रस्थ कर निम्नाकित कार्य हुए है–

- अनिलकुमार जैन, रज्जबकृत समाजवर्गी 2005
- शीतल, संतकवियों के संदर्भ में रज्जब की सास्कृतिक चेतना, 2007
- राजेश पांडे, संत कवि रज्जबदास की बानियों का सांस्कृतिक एवं सामाजिक अध्ययन, 2011
- सुनीता, रज्जब वाणी का सांस्कृतिक अनुशीलन, 1992
- कुलदीप कुमार, संतकवि रज्जबदास की सामाजिक चेतना 1999
- रामकिशन गुप्ता, संतकवि रज्जबदास संप्रदाय, साधना और साहित्य, 1996
- श्यामनारायण पंडित, काव्यशास्त्रीय भूमिका में महात्मा रज्जब की काव्यसाधना, 1987
- पी० ए० चौधरी, मध्यकालीन हिन्दी–निर्गुण काव्यधारा और संत कवि रज्जब, 1988
- जे० पी० श्रीवास्तव, रज्जब और सुंदरदास का तुलनात्मक अध्ययन, 1991
- अनिल कुमान जैन, रज्जब कृत सर्वागीः एक अध्ययन, 2007
- सिम्मी खुराना, रज्जब वानी में भक्ति और दर्शन, 2009
- आशारानी, संत रज्जब के साहित्य में प्रतिफलित साधनामूलक तत्त्वो का गवेशणात्मक अध्ययन, 2006

शोधकार्य की मौलिकता एवं उपादेयता– रज्जब के व्यापक भ्रमण प्रवचन शिष्य, निर्माण और कवित्व का सुव्यवस्थित विस्तार है यह कार्य वाह्य पूजा में हिंसा बहुत होती है रज्जब उसकी गिनती करते है और ऐसे आचरण का विरोध करते है।

हिन्दू और मुसलमान के वाह्य भेदो को प्रकृति नहीं मानती है, सुन्नत और कान विधवाने का असर जीव के पैदा होने की प्रक्रिया पर नहीं पड़ता है इसलिय रज्जब कहते है सामाजिक भेद भाव का कोई अर्थ नहीं है। दोनों धर्मो के पाखण्डो का वे विरोध करते है।

संत रज्जब ने श्जैन जंजाल ग्रन्थ लिखा है इनमे जैन मत के आडम्बरों का वे विरोध करते है।

रज्जब ने यंत्र तंत्र हिन्दू मुस्लिम के कर्म काण्ड का विरोध किया है।

रज्जब की चिंता जीवित मनुष्य के सम्मान के लिए है हिन्दू और मुसलमान दोनों के द्वारा मुर्दों की उपासना का खण्डन करते है।

रज्जब दादूपंथ के प्रबल अनुयायी, निर्गुणोपासक संत थे। उनकी भक्त चेतना के अंतर्गत कर्म काण्ड विहिन निर्गुण उपासना है। ईश्वर के नाम के पर्याय निर्गुण ब्रह्म के लिए आए हैं। वह भक्ति नाम स्मरण की है।

इस शोध कार्य के द्वारा सांस्कृतिक एकता एवं सामाजिक समरसता को आगे बढ़ाया जायेगा।

शोध कार्य से संबंधित आधारभूत ग्रंथ –

1) रज्जब की साखी, 2) रज्जब वाणी, 3) सवैया, 4) छंद त्रिभंगी, 5) अरिल ग्रंथ, 6) बावनी ग्रंथ, 7) बावनी अक्षर ग्रंथ, 8) अंतिम तिथि ग्रंथ, 1) सप्तवार ग्रंथ, 10) गुरू उपदेश आत्म ग्रन्थ, 11) अविगत लीला ग्रन्थ, 12) अकाल लीला ग्रन्थ, 13) प्राण पारिख ग्रन्थ, 14) उत्पत्ति निर्वाण ग्रंथ, 15) गृह वैराग्य बोध ग्रंथ, 16) परमिद ग्रंथ, 17) दोष दरीबा ग्रंथ, 18) श्री रज्जब वाणीरू स्वामी नारायणदास, 19) जैन जंजाल ग्रंथ।

शोध कार्य से संबंधित सहायक ग्रंथ –

1) संत रज्जब रू द0 नंद किशोर पांडे, 2) दादू पंथ के शिखर संत नंद किशोर पांडे, 3) साधर्मिक एकता और संत साहित्यः विजयेंद्र नाथ मिश्र, 4) हिंदी साहित्य का इतिहास आचार्यः रामचन्द्र शुक्ल, 5) उत्तरी भारत को संत परंपराः प0 परशुराम चतुर्वेदी, 6) हिंदी काव्य में निंगुण संप्रदाय डॉ0 पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, 7) उत्तर भारत के निंगुण संप्रदाय साहित्य का इतिहासरू डॉ0 विष्णुदत्त आरकेश, 8) बौद्धी संतो की हिन्दी वाणीः डॉ0 अम्बाशंकर नागा, 1) बौद्ध बौद्ध साधना और साहित्य डॉ0 नागेन्द्र नाथ उपाध्याय, 10) धर्मशास्त्र का इतिहासरू पी0 वी. काणे हिन्दी समिति, 11) भक्ति और साहित्य डॉ0 एम जार्ज, 12) रस मीमांसा रू आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, 13) संत काव्यधारा रामचन्द्र शुक्ल, 14) संत काव्यधारा भक्तियोगरू डॉ0 राजदेव सिंह, 15) संत काव्य संग्रहरू आचार्य परशुराम चौधरी, 16) संतमत का सरभंग संप्रदाय डॉ0 धमेंद्र ब्रह्मचारी, 17) सिद्ध साहित्य का सैद्धान्तिक पक्ष डॉ0 राममूर्ति त्रिमूर्ति, 18) सहजाध्याय आचार्य हजारी धार्मिक प्रसाद, 19) संस्कृति के चार अध्यायः श्री रामधारी सिंह दिनकर, 20) हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास खंड 4, संपा, परशुराम चौधरी, 21) हिन्दी काव्य की निर्गुणधारा में शक्तिः डॉ0 श्यामसुन्दर शुक्ल, 22) हिन्दी निर्गुण काव्य का पात्र और नामदेव की कवितारू श्री श0 के0 ओडकर।

अध्यायीकरण –

प्रथम अध्यायः भक्ति साहित्य का अखिल भारतीय स्वरूप–

- पूर्वोत्तर भारत में भक्ति चेतना
- दक्षिण भारत में भक्ति
- मध्य भारत में भक्ति
- पश्चिमी भारत में भक्ति

द्वितीय अध्यायः दादू पंथ और अनुयायी शिष्य परंपरा–

- दादूपंथ और दादूदयाल
- दादूदयाल प्रमुख शिष्य
- दादूपंथ और अल्परव्यात संत
- दादूपंथ और संत रज्जब

तृतीय अध्यायः संत रज्जब का संपादित साहित्य–

- दाइवाणी
- सर्वगी

चतुर्थ अध्यायः संत रज्जब का मौलिक साहित्य–

- संत रज्जब की रचनाओं का प्रतिपद्य
- सर्वगी की योजना
- सर्वगी के कवि
- सर्वगी का महत्व

पंचम अध्यायः संत रज्जब और समाज–

- रज्जब की भक्ति चेतना
- रज्जब की सामाजिक चेतना
- रज्जब की दार्शनिक चेतना
- रज्जब की प्रासंगिकता।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. आधार साहित्य
2. संदर्भ साहित्य
3. इंटरनेट

*****